

ये तीन रूपान्तरण हैं -

- (1) चेतन्य रूपान्तरण (Psychic Transformation)
- (2) आध्यात्मिक रूपान्तरण (Spiritual Transformation)
- (3) अतिमानसिक रूपान्तरण (Supernatural Transformation)

\* अतिमानसिक रूपान्तरण में आत्मा जान सत् (Jnana Being) में परिणत हो जाता है तथा उसका जीवन 'दिव्य जीवन' (Transcendental Life) हो जाता है। अतः अतिमानसिक रूपान्तरण के फलस्वरूप के विषय के लिए जान पुत्र (Jnana Being) तथा 'दिव्य जीवन' के संबंध में कही गयी

- जान पुत्र (Jnana Being) की स्थिति में आत्मा 'अज्ञान' के क्षेत्र से ऊपर उठ जाता है और 'जान' जो पूर्ण एकत्व की चेतना है का ही जीवन जीता है।

- जान पुत्र एक पूर्ण व्यक्ति है, और यह पूर्णता अन्तः-बाह्य - सभी पक्षों के पूर्ण एकत्व की समझ के साथ उजागर होती है।

- अद्वैत के अनुसार अतिमानसिक रूपान्तरण केवल वैधर्मिक रूपान्तरण नहीं होता, बल्कि इस रूपान्तरण में 'विषय चेतना' विषय विधारे आदि में लपकता ही जाता है। अतः फलदात्मिक है। इसका सारा कार्य 'जान-रूप' ही है।

\* जान पुत्र के प्रकार -

\* जान पुत्र को 'जीवन मुक्त' कहा जा सकता है। जहाँ सामान्यतः जीवन मुक्त है कौंध होता है कि आत्मा का जो शरीर में रहने हुए शरीर एवं दुःख के अध्ययन है मुक्त ही जाता है। वह एक प्रकार है जो संसार का मिथ्या जगत्गत शरीरघाती धर्म के ज्ञान जगत का वाणी तथा दुःख है मुक्त होने के कारण परमात्मका के क्षेत्र का मिथ्या जगत्गत अद्वैत के अनुसार जान पुत्र 'जीवन मुक्त' है जो

- दिव्य जीवन (Transcendental)

श्री अद्वैत के अनुसार 'दिव्य जीवन' वह जीवन है जहाँ के सभी मानव जान-पुत्र ही हैं। दिव्य जीवन का कर्म है 'घाती पर पूर्णता का जीवन ईश्वरत्व का जीवन' दिव्य जीवन के विषय में श्री अद्वैत कहते हैं - " हममें प्रकृति

का लक्ष्य ही है कि हम पूर्णता में अस्तिपत्तन रहें।"

"नो हे कल नो हे स्त्रीपु। नो हे कल नो हे स्त्रीपु। नो हे कल नो हे स्त्रीपु।"

\* पूर्ण अद्वैत योग (Integral Yoga) -

- श्री आरविन्द के अनुसार विकास-प्रक्रिया का चरम लक्ष्य 'दिव्य जीवन' की स्थापना है। लाक्षण - 'योग'

\* योग शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'मिलन' अथवा एकलन (Union)। अतः योग का अर्थ 'ईश्वर मिलन' है। एकलन प्राप्त करना है। योग मानव की सम्पूर्णता में ईश्वर का उद्घाटन है। यह प्रकृति में तथा प्रकृति के मौसल का प्रयत्न है - मात्र प्रकृति ही मौसल का नहीं।

\* श्री आरविन्द के पूर्ण अद्वैत योग का चरम लक्ष्य है जीवन एवं जगत का ईश्वर रूप में लयांतरण 'दिव्य जीवन' का अर्थ है जो एक प्रकार है वैयक्तिक मोक्ष न होकर सर्व का मोक्ष - सर्वसुख है।

\* योग का स्वरूप -

योग का अर्थ 'ईश्वर मिलन'। किन्तु यह पारलौकिक स्वरूप है अतः है। लौकिक स्तर में सर्वसुख के रूप में ही सकता है। या वैयक्तिक स्तर में ही सकता है। आरविन्द के अनुसार योग वह प्रक्रिया है जो चेतना के विस्तृत करने, उच्चतर उच्चतर तथा अन्तः स्वरूप होने की प्रक्रिया को रूप देता है। योग के इस सारी प्रक्रियाओं को कल मिलना है।

श्री आरविन्द के अनुसार पूर्ण अद्वैत योग (Integral Yoga) कहते हैं या पूर्ण योग कहते हैं। योग का स्वरूप -

1. उनका योग आध्यात्मिक अनुशासन है।

2. पारंपरिक अनुशासन योग का लक्ष्य विवेकज्ञान की प्राप्ति है जिसमें ज्ञान में आत्मा और परमात्मा अनात्मा के भेद का स्फट ज्ञान ही प्राप्त है। किन्तु आरविन्द के अनुसार योग का लक्ष्य 'आत्मा' तथा अनात्मा के भेद का ज्ञान नहीं है बल्कि 'अनात्मा' में भी 'आत्मरूप' का प्राप्ति है।

3. योग के अर्थ: योगी प्रतिपादक मानते हैं कि योग का लक्ष्य भौतिक एवं आध्यात्मिक स्तर का निर्वहण है, किन्तु उच्च उच्च है।

किन्तु श्री आरविन्द का कहना है कि योग का लक्ष्य भौतिक

एवं शारीरिक को हनन डालना जिसे जली, क्योंकि उनको भी अतिमानसिक प्रकाश से रक्षा कर देना है।

4. सामान्यतः धीमे धीमे के अनुसार योग को लक्ष्य की प्राप्ति ईश्वर के एकत्र की प्राप्ति समाधि की अवस्था में अथवा पूर्ण आह्लादपूर्य तन्मयता की अवस्था में ही हो सकती है। इस अवस्था में जाग्रतावस्था की चेतना पूर्णतया घूमिल हो जाती है, तथा सांसारिकता एवं साधारण परिवेश से सम्पर्क एक प्रकार से हट जाता है। इसके विपरीत श्री आरविन्द का कहना है कि पूर्ण एकत्र की प्राप्ति शक्ति में रहते हुए, जाग्रतावस्था तथा जात से सम्पूर्ण सम्पर्क बिना ही हो सकता है।

5. श्री आरविन्द के अनुसार योग का लक्ष्य न सिर्फ भुक्ति वानुक्ति 'सुखों की प्राप्ति' है तथा ध्यान पर दिव्य जीवन को उभारना है।

6. आरविन्द के अनुसार मानस से अतिमानस के लिए नौ प्रकार सोपान जहाँ इसके सहाय मानस - उच्चतर मानस - प्रदीप्त मानस - अन्तर्हीन व्यापक मानस का स्वरूप कला होता है। तथा अतिमानसिक प्रकाश की ग्रहण करने के लिए तीन प्रक्रियाएँ आती हैं जो निम्न प्रकार के अनुरूप हैं -

1. आत्मधारिणिकता की प्रक्रिया (Process of Psychisation)

2. 'आत्मधार्मिकता' की प्रक्रिया (Spiritualisation) तथा

3. अतिमानसिकता की प्रक्रिया (Supermentalisation)

इन तीनों को पूर्ण योग अथवा अद्वैत योग के तीन सोपान के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इनमें सभी विधियाँ आन्तरिक उत्थान की विधियाँ हैं क्योंकि इनका लक्ष्य मानस की उच्चतर स्तरों में ले चलना है। इसी कारण श्री आरविन्द के योग को 'आन्तरिक योग' भी कहते हैं।

4. अंतिम प्रक्रिया अतिमानसिकता की प्रक्रिया अंतिम कमी है जिसमें आत्मा उच्चतर चेतना के अवतरण की ग्रहण कर लेता अथवा उसकी चेतना 'ईश्वरीय' हो जाता है। सभी उन्तभाव सम हो जाता है तथा 'पूर्ण अद्वैत एकत्र' की चेतना स्पष्ट हो जाती है। श्री आरविन्द के अनुसार इसके भी नौ स्तर हैं -

1. आनन्दालता (Kāma)

2. शिवाता (Rāga)

3. शान्ति (Moha) तथा

4. नीरक्षता (Avidya) (नीरक्षता)

- श्री अरविन्द के अनुसार योग के अतिमानसिकता स्तर से ही फल के परिवर्तन होते हैं -

सर्वभौमता (Pravakshya) तथा परात्मकता (Pratya-  
deshanavakshya) । सर्वभौमता - चेतना का पूर्ण विना  
है, परात्मकता पूर्ण एकाग्र की स्थिति अनुभूति है।

205 10

205 20

206 1

(2)

(3)

(4)

207 : 1